



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 04-02-2025

सीतापुर(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-02-04 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-02-05	2025-02-06	2025-02-07	2025-02-08	2025-02-09
वर्षा (मिमी)	2.0	1.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	27.0	29.0	27.0	26.0	26.0
न्यूनतम तापमान(से.)	13.0	14.0	12.0	11.0	10.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	87	89	83	83	83
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	52	51	48	47	43
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	7	11	14	13	9
पवन दिशा (डिग्री)	307	294	293	285	284
क्लाउड कवर (ओक्टा)	3	1	0	1	4

मौसम सारांश / चेतावनी:

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अगले पांच दिनों में हल्के से मध्यम बादल छाए रहने के कारण दिनांक 05-06 फरवरी 2025 को हल्की बारिश की संभावना है। ऊपरी सतह पर हल्की धुंध रहेगी। वातावरण के बिगड़े मिजाज और सुबह व रात में हल्का कोहरा छाए रहने की संभावना है। अधिकतम तापमान 26.0-29.0 डिग्री सेल्सियस के बीच है, जो सामान्य से 2-3 डिग्री सेल्सियस अधिक होने की संभावना है और न्यूनतम तापमान 10.0-14.0 डिग्री सेल्सियस के बीच है, जो सामान्य से 1-2 डिग्री सेल्सियस अधिक होने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता की अधिकतम और न्यूनतम सीमा 83-89 और 43-52% के बीच है। हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम है और हवा की गति 7.0-14.0 किमी प्रति घंटे के बीच है और हवा की गति सामान्य से 1-2 किमी प्रति घंटे अधिक होने की संभावना है।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि गेहूँ, सरसों आदि फसलों में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करें तथा खेत तैयारी कर, जायद मक्का व ग्रीष्म कालीन सब्जियों की बुआई के लिए खाद व बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य करें। कीटनाशी, रोगनाशी एवं खरपतवार नाशी रसायनों के लिए अलग-अलग अथवा उपकरणों को साफ पानी से धोकर ही प्रयोग करें तथा कीटनाशी, रोगनाशी एवं खरपतवार नाशी रसायनों का छिड़काव हवा के विपरीत दिशा में खड़े होकर छिड़काव या बुरकाव न करें। छिड़काव यथा सम्भव हो तो सायंकाल के समय करें, छिड़काव के बाद खाने-पिने से पूर्व हाथों को साबुन या हैंड वाश से अच्छी तरह से धो लेना चाहिए तथा कपड़ों को धोकर नहा लेना चाहिए।

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि जायद मक्का व ग्रीष्म कालीन सब्जियों के फसलों की बुआई के लिए खाद व बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य करें।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
गेहूँ	गेहूँ की फसल में तीसरी सिंचाई बुवाई के 60-65 दिन बाद गाँठ बनने की अवस्था पर हल्की सिंचाई अवश्य करें तथा नत्रजन की एक तिहाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग दूसरी सिंचाई के बाद ओट आने पर करें। अति विलम्ब से बोई गई गेहूँ की फसल में यदि सकरी व चौड़ी पत्ती वाले, दोनों प्रकार के खरपतवार दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फुरान 75% डब्लू पी ३३ ग्राम/हेक्टेयर या मैट्रीब्यूजिन 70 % डब्लू पी 250 ग्राम / हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
सरसों	सरसों की फसल में दूसरी सिंचाई फूल निकलने के पहले या दाना भरने की अवस्था पर करें। आसमान में लगातार बादल छाए रहने के कारण सरसों की फसल में माँहू, चित्रित वग एवं पत्ती सुरंगक कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफास 20 % ईसी 1.0 लीटर/हेक्टेयर या मोनोक्रोटोफॉस 36 % एस.एल.की 500 मिली० /हेक्टेयर की दर से 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।
फील्ड पी	वातावरण में नमी की अधिकता होने के कारण मटर के फसल की पत्तियों, तनों और फलियों पर सफेद चूर्ण की तरह के लक्षण दिखाई दे तो, (बुकनी रोग) इसके रोकथाम हेतु ट्राइडोमार्फ 80% ईसी की 500 मिली० प्रति हेक्टेयर की दर से 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर १२-१५ दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।
चना	चने की फसल में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई फूल निकलने से पहले या दाना भरने की अवस्था पर करें। चने की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफास 50% ईसी + साइपरमेथ्रिन 5% ईसी 2.0 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
मक्का	जायद मक्के की संस्तुति संकुल प्रजातियाँ- कंचन, गौरव,स्वेता, आजाद उत्तम एवं शंकर प्रजातियाँ- प्रकाश, दिकाल्ब- 7074, पीएचबी- 8144, दक्कन 115, एम.एम.एच.-१३३ आदि में से एक किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए खाद एवं बीज की व्यवस्था कर बुवाई करें। मक्के की संकुल प्रजाति की बुवाई के लिए २०-२५ किलोग्राम बीज/हेक्टेयर तथा शंकर प्रजाति १८-२० किलोग्राम बीज / हेक्टेयर की दर से बुवाई करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
आलू	समय से बोई गई आलू की फसल में किसी भी प्रकार की सस्य क्रियाये न करें। वातावरण में नमी बढ़ने/ बादल छाये रहने और तापक्रम गिरने से आलू की फसल में झुलसा रोग का प्रकोप तेजी से फैलता है, अतः इसके रोकथाम हेतु मैकोजेब या रिडोमिल २.५ ग्राम/लीटर पानी अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड ३.० ग्राम/लीटर पानी का में घोल बनाकर १२-१५ दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
प्याज	ग्रीष्म कालीन मौसम में बोई जाने वाली सब्जियों जैसे- भिण्डी, तोरई, खीरा, करेला, लौकी एवं कद्दू आदि की बुवाई के लिए खेत की तैयारी करें। प्याज के तैयार पौध की रोपाई करें तथा पौध की रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें। प्याज की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडीमेथलीन ३०% ई.सी.3.5 लीटर दवा /हेक्टेयर रोपाई के तुरंत बाद या सिंचाई के ठीक पहले 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। टमाटर,मिर्च की फसल में पछेती झुलसा और बैक्टीरियल बिल्ट रोग का प्रकोप दिखाई देने पर 10 लीटर पानी में 30 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइलिन का मिश्रण मिलाकर छिड़काव करें।
आम	आम के बागों में भुनगा एवं लस्सी कीट प्रकोप दिखाई देने के आसार है अतः इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई सी 2.0 मिलीलीटर या फेनिट्रोथियान 50 ई सी 3.0 मिलीलीटर/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बेर के फलों को गिरने से बचाने के लिए सुपर 6 हार्मोन 1.0 मिलीलीटर प्रति 4.5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। केले के बागों की निराई- गुड़ाई करते समय पौधों पर मिट्टी चढ़ा दें पुत्तियों की छटाई करें तथा फूल एवं फल निकलने पर बांस अथवा लकड़ी से पौधों को सहारा दें। आम के पेड़ों में सफाई करें तथा सूखे एवं रोग ग्रस्त टहनियों को काट दें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	वर्तमान मौसम को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह-शाम पशुओं के ऊपर झूल डालें, जानवरों को रात के दौरान खुले में न बांधें और रात में खिड़कियों और दरवाजों पर जूट के बोरे के पर्दे लगाएं और दिन के दौरान धूप में पर्दे हटा दें। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी दिन में ३-४ बार अवश्य पिलायें। पशुओं को साफ-सुथरे स्थान पर रखें।

मूर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों को दिन में 15 से 16 घंटे प्रकाश उपलब्ध कराये। मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। चूजों को ठंड से बचाने हेतु पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करें।